>

Title: Need to construct embankments along various rivers in Shahjahanpur Parliamentary Constituency, Uttar Pradesh.

श्री मिथिलेश कुमार : माननीय सभापति महोदय, मैं उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहांपुर से चुनकर आया हूं। हमारा जिला कृषि क्षेत्र में बहुत आगे है, लेकिन दुर्भाग्य इस बात का है कि पिछले दो वर्षों से लगातार वहां बाढ़ आ रही है और वह तराई का इलाका भी है। हमारे यहां धान की दो फसलें होती हैं। एक धान की फसल कट गई है और दूसरी लग गई है, ऐसी जगह से मैं आया हूं। मैं दो साल से उत्तर प्रदेश सरकार को बार-बार पत्र लिख रहा हूं कि हमारे यहां ठोकरें बनवा दी जायें।...(व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान (घोसी): यह केन्द्र सरकार बनवाएगी।...(व्यवधान)

श्री मिथिलेश कुमार : मैं अपनी बात कहना चाहता हूं। दारा सिंह जी, आप हमारा सहयोग करें, आप बसपा के नेता हैं।...(व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान : आप केन्द्र सरकार से डिमांड करिये कि क्यों नहीं बन रही है।

सभापति महोदय : वे आपका सहयोग कर रहे हैं।

श्री मिथिलेश कुमार: मैं अपनी बात कह लूं, जिसमें विकास खंड कलान में एक गांव कुडरिया है। पिछले साल वहां पर बाढ़ आने पर एक गांव ऐसा कटा कि एक आदमी गांव वालों के सामने उसमें डूबकर मर गया। वह पानी में गिर गया और वहां से उसकी लाश भी आज तक नहीं मिली। ऐसे ही 4-5 गांव हैं, कुनिया, मौअज्जमपुर, भरतापुर, नौगया, इस टाइप के विकास खंड मिर्जापुर, विकास खंड कलान, जैतीपुर, मदनापुर और निगोही, इन ब्लाकों में जबरदस्त तबाही हुई। वहां हजारों करोड़ रुपये का पैकेज गया।

मैंने भारत सरकार के माननीय प्रधानमंत्री जी से निवेदन किया तो उन्होंने एक टीम वहां भेजी। 37 करोड़ रुपये भी गये, लेकिन वे ठोकरें आज तक नहीं बनाई गई। हम बार-बार लिखते हैं तो उत्तर प्रदेश सरकार से जवाब आता है कि हमारे पास पैसा नहीं है, जो हम ठोकरें बनवा दें। पूरे उत्तर प्रदेश में लखनऊ आप जायें तो क्या चमाचम पत्थर लग रहा है, लेकिन अम्बेडकर गांव का केवल विकास हो रहा है और उन ठोकरों को बनाने के लिए धन नहीं है। मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं, यहां माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी हैं...(व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान : इनको तो उत्तर प्रदेश सरकार को बधाई देनी चाहिए कि लखनऊ पूरे विश्व के पैमाने पर चमक रहा है।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : दारा सिंह जी, उनको अपनी व्यथा कहने दीजिए।

श्री मिथिलेश कुमार : मैं संसदीय कार्य मंत्री जी से एक व्यवस्था चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश सरकार को एक निर्देश दें कि कम से कम ठोकरों के लिए पैसा जिले को आबंटित कर दे। हम जब जिले की मीटिंग होती है तब मीटिंग में इस बात को उठाते हैं। अधिकारी कहते हैं कि हमें पैसा नहीं मिल रहा है तो हम कहां से खर्च करें।

श्री शैलेन्द्र कुमार : इन्हें ठोकरें नहीं, तटबंध कहिये।

श्री मिथिलेश कुमार : हमारे जिले में इन्हें ठोकरें कहा जाता है, आप तटबंध मान लीजिए।

सभापति महोदय : आप तो लोक सभा में बोल रहे हैं तो आप तो सैण्ट्रल गवर्नमेंट से ही मांगेंगे न।

श्री मिथिलेश कुमार : मैं सैण्ट्रल गवर्नमेंट से मांग करता हूं कि उसके लिए एक व्यवस्था करें।

एक बात मैं और कहना चाहता हूं। एक कोलाघाट का बहुत बड़ा पुल बनाया है।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : इसमें आप दूसरा टॉपिक नहीं जोड़ सकते हैं।

श्री मिथिलेश कुमार : मैं उसी टॉपिक पर कह रहा हूं। जो कोलाघाट का पुल है, उसकी एक साइड टूटने को तैयार है, इसके लिए चिट्ठी लिखी लेकिन उस बांध के लिए पैसा नहीं है। अगर वह पुल टूट गया तो करोड़ों रूपयों का नुकसान हो जाएगा।

महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करता हूं कि एक ऐसी व्यवस्था दें कि बांध के लिए पैसा आबंटित हो जाए, धन्यवाद।